खाओ और खाने दो

सुषमा मुनींद्र

खाओ और खाने दो

सुषमा मुनीन्द्र

अनुक्रम:

कहानी	पृष्ठ संख्या
इस रूट की सभी लाइनें व्यस्त हैं	3
जब कैलेण्डर पर तारीख बदल रही थी	29
खाओ और खाने दो	52

इस रूट की सभी लाइनें व्यस्त हैं

कोई एक सच फिर पूरी जिंदगी का प्रतिपादन बन जाता है और सम्मुख होकर बार-बार बताता है वही एक सच है, बाकी जो कुछ है पूरक है, भ्रम है, माध्यम है, उपक्रम है, उपाय है या इधर-उधर से आती सूचनायें हैं.....

वृहत्तर सच।

जीवनी के सम्मुख पत्रिका के विमोचन समारोह के छाया चित्रों से लबालब भरा 'खबर' (दैनिक समाचार पत्र) फैला हुआ है। 'खबर' के विकास की चक्षुदर्शी रही जीवनी छाया चित्रों में नहीं है। मेघ मिश्र से बोली थी-

''पत्रिका में साहित्य के लिये कुछ पृष्ठ रहेंगे न?''

''हाँ। एक कहानी, कुछ कवितायें, पुस्तक समीक्षा के लिये कम से कम छः पेज रखने हैं।''

''साहित्य का मैटर मैं सम्भालूँगी। साहित्य सम्पादक में मेरा नाम जाना चाहिये।''

''हम-तुम रिटायरमेंट वाले हुये जीवनी। युवाओं को आगे आने दो।''

अस्सी के दशक वाली उसकी अदा में अब दम नहीं रहा अन्यथा कहती - वानप्रस्थ आपको अर्पण हो। मैं फिट हूँ।

''तब तो जागृति को अपार्च्यूनिटी मिलनी चाहिये।''

''देखता हूँ।''

मेघ मिश्र इस तरह बोलने लगे हैं कि बात किसी नतीजे पर नहीं पहुँचती।

हरी और नीली विद्युतीय झालरों से सजे मोरपंखी आभा दे रहे खबर के भव्य भवन जिसके शीर्ष पर दैत्याकार अक्षरों में लिखा 'खबर' एक दूरी से देखा जा सकता है ने खबर के आधे पृष्ठ को घेर रखा है। जीवनी, मेघ मिश्र के साथ निर्माणाधीन भवन देखने गई थी। मेघ मिश्र ने बताया था -